13-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - तुम बाप के पास आये हो अपनी जीवन हीरे समान बनाने, बाप की याद से ही ऐसी जीवन बनेगी"

One & Only way

बुद्धि से निकालो

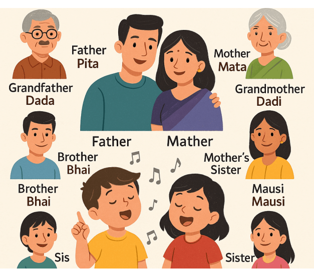

प्रश्नः- नई दुनिया में ऊंच पद के लिए कौन सा एक मुख्य पुरुषार्थ करना है?

सिर्फ मुझे याद करो

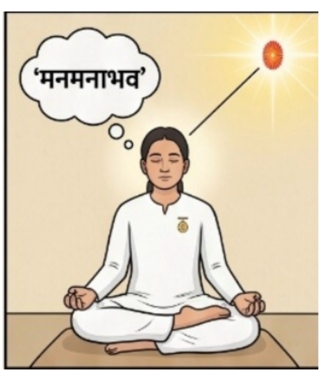

उत्तर:-बाबा कहते - मीठे बच्चे, जिन पुराने सम्बन्धियों ने इतना दु:खी किया, अब उनके मोहजाल से बुद्धि को निकाल एक मुझे याद करो। उनके साथ रहते भी मन को मेरे में लगाओ। मनमनाभव का मन्त्र सदा याद रखो तो तुम नई दुनिया में ऊंच पद पायेंगे।

उच्च पद

गीत:-तूने रात गँवाई... Click

तूने रात गँवायी सोय के,
दिवस गँवाया खाय के।
हीरा जनम अमोल था,
कौड़ी बदले जाय।
तूने रात गँवायी सोय के।

सुमिरन लगन लगाय के,
मुख से कछु ना बोल रे।
बाहर के पट बंद कर ले,
अंतर के पट खोल रे।
माला फेरत जुग हुआ,
गया ना मन का फेर रे।
गया ना मन का फेर रे।
हाथ का मनका तोड़ दे,
हाथ का मनका तोड़ दे,
मन का मनका फेर।

तूने रात गँवायी सोय के,
दिवस गँवाया खाय के।
हीरा जनम अमोल था,
कौड़ी बदले जाय।
तूने रात गँवायी सोय के।

दुख में सुमिरन सब करें,
सुख में करे न कोय रे।
जो सुख में सुमिरन करे,
तो दुख काहे को होय रे।
सुख में सुमिरन ना किया,
दुख में करता याद रे।
दुख में करता याद रे।
कहे कबीर उस दास की,
कहे कबीर उस दास की,
कौन सुने फ़रियाद।

तूने रात गँवायी सोय के,
दिवस गँवाया खाय के।
हीरा जनम अमोल था,
कौड़ी बदले जाय।
तूने रात गँवायी सोय के।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ओम् शान्ति। जैसे बच्चों को सभी शास्त्रों का सार समझाते हैं, वैसे इन गीतों का भी सार तुमको समझाते हैं। वही सबका रूहानी बाप, रूहानी बच्चों को ब्रह्मा तन से बैठ समझा रहे हैं। बाप समझाते हैं हे बच्चों - तुम जानते हो हमारा हीरे जैसा जन्म बन रहा है। बाप के पास आते ही हो हीरे जैसा जन्म बनाने। हीरे जैसा जन्म कहा जाता है स्वर्गवासियों का। कौड़ी जैसा जन्म है नर्कवासियों का। तुम संगमयुग को भी जान चुके हो। हम अभी संगमयुगवासी हैं। यह संगमयुग सबके लिए कल्याणकारी है। इस संगमयुग में ही सर्व की गति सद्गति होती है। कौन करते हैं? परमधाम से आने वाला मुसाफिर। वह मुसाफिर है ना। तुम मुसाफिर नहीं हो, तुम आकर जाते नहीं हो। बाप कहते हैं - मैं पुरानी दुनिया में आकर फिर लौट जाता हूँ। बच्चे जानते हैं यह सेवा करने वाला सिर्फ एक मुसाफिर है, जो आकर हम बच्चों की बड़ी सेवा करते हैं। ऐसी सेवा और कोई कर न सके। सेवा के लिए ही पुकारते हैं कि आकर हम पतितों की सेवा करो। बाप भी कहते हैं हम बच्चों

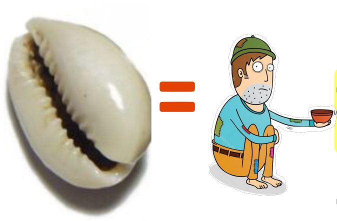

मुसाफिर हूँ मैं दूर का,
दीवाना हूँ मैं
धूप (पवित्रता) का
मुझे ना भाये, ना
भाये, ना भाये
छाँव (अपवित्रता) रे

Mind very well...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

की सेवा में आये हैं क्योंकि बच्चे बहुत दु:खी हैं। पुकारते भी हैं हमारे दु:ख हरो और शान्ति दो। दो चीज़ हमेशा याद रहती है - सुख और शान्ति। यहाँ दु:ख और अशान्ति है, तब पुकारते हैं। बाप ही आकर सारा राज़ सृष्टि चक्र का बच्चों को समझाते हैं। बच्चे समझते हैं - अब भक्ति मार्ग खत्म होता है। कलियुग का अन्त माना भक्ति नीचे उतरती आती है। ज्ञान से तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। तुम ऊंच ते ऊंच पद पा लेते हो फिर वह प्रालब्ध का सुख कम होता जाता है। भक्ति तो भारत में जितनी होती है उतनी और कहाँ नहीं। आधाकल्प भक्ति चलती है। जब से द्वापर शुरू होता है और दूसरे धर्म स्थापन होना शुरू होते हैं तब से भक्ति शुरू होती है। भक्ति भी पहले बहुत अच्छी होती है। जैसे स्वर्ग पहले बहुत अच्छा होता है फिर आहिस्ते-आहिस्ते कला कम होती जाती है। भक्ति शुरू होती है तो पहले-पहले शिव के पुजारी बनते हैं। आधाकल्प कोई पूजा होती नहीं है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है और दूसरे धर्म भी शुरू होते हैं। इतनी भक्ति और कोई कर नहीं सकते,

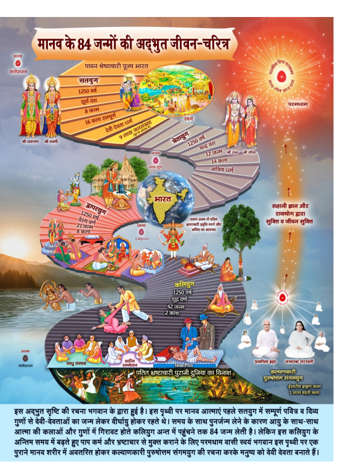

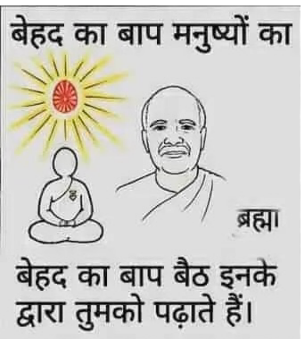

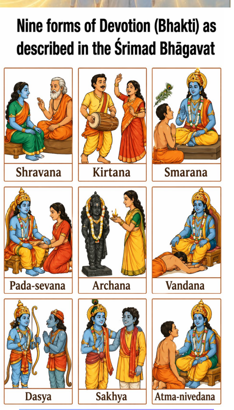

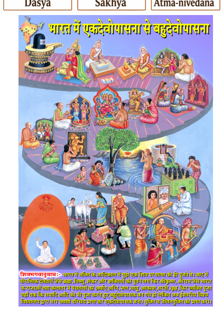

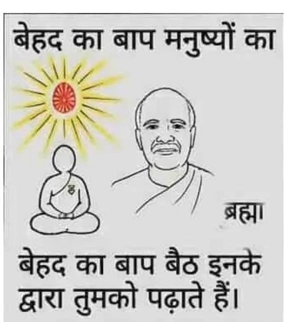

पूरा आधा-कल्प भक्ति चलती है। यह भी तुम बच्चे जानते हो कि बाप, जो सबको, खास भारत को सद्गति देते हैं, स्वर्ग का मालिक बनाते हैं वही दूरदेश का मुसाफिर आया हुआ है - हम बच्चों को फिर से स्वर्ग की बादशाही देने। वर्सा भी कितना जबरदस्त है। परन्तु एक भी बात किसकी बुद्धि में नहीं बैठती। भारत में भक्ति कितनी करते हैं। कितने मन्दिर हैं। भारत खण्ड में तो ढेर मन्दिर हैं। अभी तुम जानते हो यह किसके मन्दिर हैं। पहले-पहले तो शिवबाबा का मन्दिर बनता है, फिर बनते हैं देवताओं के। वह मन्दिर भी तुम्हारे सामने खड़े हैं। एक तरफ शिवबाबा की पूजा करते रहते हैं, दूसरे तरफ शिवबाबा तुमको पूज्य बना रहे हैं। तुम यहाँ आये हो पूज्य देवता बनने। जो भी देवताओं के पुजारी हैं - वास्तव में वह भी आकर यहाँ ब्राह्मण बनेंगे। धीरे-धीरे वृद्धि होती जायेगी। सभी इकट्ठे तो पढ़ न सकें। समय लगता है। कल्प पहले भी जिन्होंने पढ़ा होगा वही फिर पढ़ेंगे। एक दो को पढ़ाते रहना है। सबको बाप और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज सुनाते हैं, जिससे मनुष्य

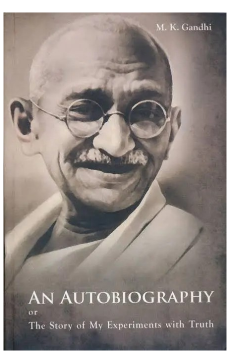

स्वर्ग का मालिक बन सकते हैं। सो आकर समझो। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि यह नाटक कैसे चक्र लगाता है। कहानी कोई लाखों वर्ष की तो नहीं सुना सकते। तुम जानते हो 5 हजार वर्ष पहले क्या था, किसका राज्य था! भारत में हम पूज्य देवी-देवताओं का राज्य था। याद आया ना - हम पूज्य थे, फिर पुजारी बनें। आगे यह पता नहीं था - हम सो पूज्य देवता थे, फिर हमने 84 जन्म लिए। 84 जन्मों की कहानी लक्ष्मी-नारायण की है। तुम अपने 84 जन्मों की कहानी सुनाते हो। उनको तो अपनी कहानी बैठ लिखने में बहुत समय लगता है। तुम एक मिनट में 84 जन्मों की कहानी बता सकते हो। वह तो एक जन्म की कहानी लिखते हैं। छोटे पन में क्या-क्या किया। यह भी अपनी कहानी बताते हैं। हम 84 का चक्र कैसे लगाते हैं। एक की तो बात नहीं, बहुत ब्राह्मण हैं। तुम ही इस चक्र को जानते हो। इस चक्र को जानने से तुम राजा रानी बनते हो और फिर औरों को बनाते भी हो। भक्ति भी भारतवासियों जैसी कोई नहीं करते हैं। और जो भी मठ पंथ धर्म आदि हैं, वह हमारे

13-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

भक्ति के समय स्थापन होते हैं। पहले-पहले हमारा कितना छोटा फूलों का झाड़ था, रूहानी गॉर्डन था। तुम चैतन्य फूल थे। इनको कहा जाता है फूलों का बगीचा। फिर वही कांटों का बगीचा होता जाता है। इस समय सब कांटे बन गये हैं। फिर कांटों से फूल कैसे बनना है, सो बाप बैठ समझाते हैं। एक दो को दु:ख देना कांटा लगाना है। स्टूडेन्ट लाइफ इज दी बेस्ट कहा जाता है। वह बहुत अच्छी होती है। बच्चे बच्चियां बड़ी खुशी में पढ़ते रहते हैं। शादी की और एक दो को कांटा लगाना शुरू किया। सतयुग में कोई कांटा नहीं लगाते। अभी तुम फिर फूल बनते हो। तुम जानते हो भारत स्वर्ग था तो कितने अपार सुख थे। सोने की खानियां थी। अभी वह खाली हो गई है। फिर तुमको सोना भरपूर मिलेगा। भारत में ही सोने, हीरे, जवाहरात की खानियां थी। उस समय अमेरिका आदि कुछ भी नहीं होता। बाम्बे भी नहीं होती। वन्डर है ना। कलियुग के अन्त में कुछ भी सोना देखने में नहीं आता फिर सतयुग आदि में इतनी सोने की खानियां भरतू हो जाती हैं। सोने के

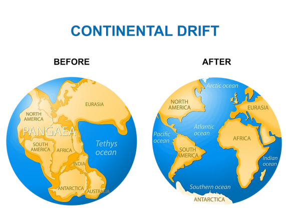

जी मेरे मीठे बाबा..

13-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

माया मच्छन्दर का खेल

कहानी की शुरुआत क्षीर सागर मंथन से होती है। अमृत निकलने के बाद विष्णु जगन मोहिनी के रूप में आकर देवताओं को अमृत देते हैं और राक्षसों को वंचित करते हैं। नारद के माध्यम से यह जानकर, भगवान शिव कहते हैं कि कोई भी उन्हें इस तरह धोखा नहीं दे सकता क्योंकि उन्होंने ही कामदहन किया था। यह सुनकर विष्णु फिर से मोहिनी के रूप में आ जाते हैं। भगवान शिव मोहिनी को देखकर मोहित हो जाते हैं। तब विष्णु अपने मूल रूप में प्रकट होते हैं और शिव का उपहास करते हैं। भगवान शिव ने विष्णु को सबक सिखाने की चुनौती ली। लक्ष्मी देवी का भी तर्क है कि स्त्री पुरुष से श्रेष्ठ है और इसलिए विष्णु ने स्त्री का रूप धारण किया। उन्होंने इसे साबित करने का फैंसला किया।

अब विष्णु ने ऋषि माया मचिंद्र के रूप में अवतार लिया और मोक्ष प्राप्त करने के लिए अपनी तपस्या शुरू की। नारद द्वारा उकसाए जाने पर, हनुमान मचिंद्र की परीक्षा लेने जाते हैं और उन्हें अपने स्वामी के रूप में पहचानकर उनके चरणों में झुक जाते हैं। भगवान शिव गोरख का रूप धारण करके मचिन्द्र के शिष्य बन जाते हैं। लक्ष्मी का जन्म तिलोत्तमा देवी के रूप में होता है। वह पुरुष जाति से नफ़रत करती है और एक महिला राज्य की स्थापना करती है। यह सुनकर, मचिंद्रा उसका सामना करता है लेकिन तिलोत्तमा उसे चेतावनी देती है। लेकिन उसकी चाल सफल नहीं होती है, इसलिए, वह उसकी शिष्य बन जाती है, उससे शादी कर लेती है और दोनों को मीनानाथ नामक पुत्र जन्मता है। हनुमान के माध्यम से इसे जानने बाद, गोरक अपने गुरु के मन को वापस आध्यात्मिकता की ओर मोड़ने का फैसला करता है। गोरख उसे बचाने के लिए निकलता है, लेकिन पूरा अनुभव गुरु द्वारा स्थापित एक 'भ्रम' साबित होता है। कई विशेष और दिलचस्प चीजें होती हैं, जिसमें गोरख का सिर काटने का, उसका सिर फिर से लुढ़कता हुआ आकर उसके शरीर से जुड़ना शामिल है। एक समय वह एक समुन्दर के किनारे पर गया और वहाँ उसने किनारे पर कई मोती, सोने की ईंटें और रत्न देखे। उसने सोचा कि वह उन्हें वापस अपने स्थान पर लाएगा और फिर अपनी पोशाक में और जहाँ भी संभव हो भरना शुरू कर दिया। लेकिन थोड़ी देर बाद उसे इस सच्चाई का एहसास होता है कि यह सब एक भ्रम है। तिलोत्तमा देवी गोरख के प्रयासों को सफल नहीं होने देती और उन्हें खत्म करने की कोशिश भी करती है। लेकिन गोरक अपने गुरु को अपने साथ ले जाने में सफल हो जाता है, लेकिन उसके बेटे का बंधन मचिंद्र को पीछे खींच लेता है। उसी समय, गोरक मीनानाथ पर एक सांप भेजता है और वह मर जाता है। मचिंद्र लड़के को जीवित करने की कोशिश करता है, लेकिन वह शारीरिक बंधन के कारण अपनी शक्तियों को खो देता है, तब मचिंद्र गोरख को कोशिश करने के लिए कहता है, लेकिन वह भी असफल हो जाता है। निराश होकर गोरक ने आत्मदाह किया, हनुमान गोरख की राख बाहर लाकर मचिंद्र से गोरख को जीवित करने का अनुरोध करता है। सच्चे मन से किया गया मचिंद्र का प्रयास गोरख को वापस जीवित करता है। उस समय, गोरख सवाल करते हैं कि वह मीनानाथ को जीवित क्यों नहीं कर पाया? तब हनुमान उसे समझाते हैं कि उसकी पूरी शक्ति उसके गुरु की भक्ति है जिसे वह अहंकार के कारण भूल गया है। गोरख को अपनी गलती का एहसास होता है, वह अपने गुरु से प्रार्थना करता है और मीनानाथ को जीवित करता है। अंत में, वे सभी वैकुंठ वापस पहुंचते हैं तब भगवान विष्णु बताते हैं कि सृष्टि में नर और मादा समान हैं और मनुष्यों को ऐसे भ्रम से बचना चाहिए।

आध्यात्मिक भाव: –
शिव बाबा कहते हैं कि इस खेल में, भ्रमित करने वाली रोचक बातें दिखाई गई है लेकिन एक ज्ञानी आत्मा को माया की चहचहाट में, मायावी भ्रम में नहीं फँसना चाहिए। खेल में ये भी दिखाते हैं कि गोरख को सोने की ईंटें, रत्न मिला लेकिन ये भी भ्रम था।
शिव बाबा कहते हैं कि वे अपने बच्चों को ऐसी दुनिया में भेजते हैं जहाँ सचमुच हीरे जवाहर पत्थर जैसे पडे रहते हैं, सोने की ईंटों से महल बनते हैं अर्थात् स्वर्ग में भेज देते हैं।

महल बन जाते हैं। वन्डर है ना। वहाँ खानियों से कितना ढेर सोना निकालते हैं। जैसे यहाँ मिट्टी की ईंटें बनती हैं, वैसे वहाँ सोने की ईंटें बनती हैं। माया मच्छन्दर का खेल दिखाते हैं ना। ध्यान में देखा यहाँ तो सोना ही सोना है। बरोबर सतयुग में सोना होगा। यहाँ तो देखो मिट्टी की ईंटें भी नहीं मिलती हैं। जितनी यहाँ ईंटें पैसे से मिलती हैं, उतनी वहाँ सोने की ईंटें मुफ्त मिलती हैं। रात-दिन का फर्क है। तो क्यों नहीं पुरुषार्थ करना चाहिए - नई दुनिया में ऊंच पद पाने का! यहाँ मोहजाल में क्यों फसें!

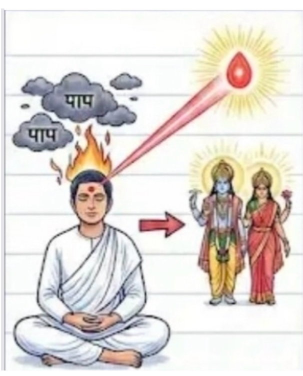

Point for Life time

Mind very very very well...

बाप कहते हैं पुराने सम्बन्धों में तुम कितना दु:ख उठाते हो! बाबा ऐसे नहीं कहते कि इनको छोड़ दो। सिर्फ बुद्धियोग एक बाप से लगाओ तो तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। मनमनाभव का अर्थ ही है - मुझे याद करो और विष्णु चतुर्भुज को अर्थात् विष्णुपुरी को याद करो। मूल है ही एक

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अब मुझे छोड़ के ना जाना तुम
दिल मेरा तोड़ के न जाना तुम
तुम तो आये हो मनाने से
खो न जाना किसी बहाने से
जान जाती है तेरे जाने सेX2
तेरा आशिक़ हूँ मैं ज़माने से X2
इश्क छुपता नहीं छुपाने से

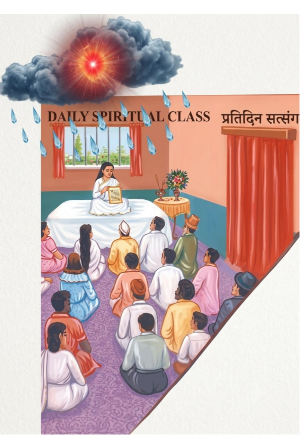

13-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अक्षर। भक्ति मार्ग में तो ढेर पंचायत है। अभी तुम सब आत्मायें आशिक हो एक माशूक परमपिता परमात्मा के। वह तुमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। सब आत्मायें उनको याद करते हैं। तुम रूहानी आशिक, रूहानी माशूक के एक ही बार बनते हो। बाकी तो सब मनुष्य हैं जिस्मानी आशिक माशूक। अभी बेहद के आशिकों को बेहद का माशूक आकर मिला है। उनको कहते भी हैं - आओ आकर हमको पतित से पावन बनाओ। एक को ही पुकारते हैं। तुम जानते हो हमारी आत्मा पतित बनी है इसलिए पुकारते हैं पतित-पावन आओ। कुम्भ का मेला लगता है, कितने जाकर गंगा स्नान करते हैं। फायदा कुछ भी नहीं। पावन कोई भी बनता नहीं। अभी बाप आकर ज्ञान वर्षा करते हैं। तुम्हारे ऊपर ज्ञान की वर्षा हो रही है, जिससे फिर कांटों का जंगल फूलों का बगीचा बन जायेगा।

Points:

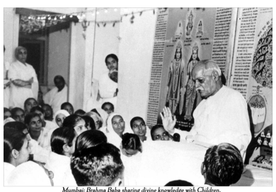

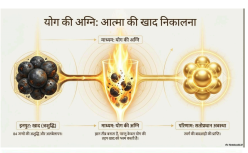

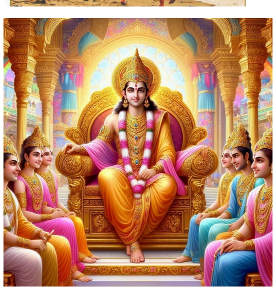

तुम जानते हो - हमारा जब राज्य होगा तो वहाँ कोई पतित होगा ही नहीं। सारे विश्व पर ज्ञान वर्षा हो जाती है। सब कुछ हरा भरा हो जाता है। खानियां भी हीरे जवाहरों की नई बन जाती हैं। अब तुम बच्चों को कितना खुशी में रहना चाहिए। सम्मुख देखते हो, बेहद का बाप बैठ समझाते हैं कि तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। भल तुम कहाँ भी बैठो - स्नान करो, बुद्धि में बाप की याद रहे। वहाँ तो याद करने की फुर्सत है। बाप को जितना याद करेंगे उतनी कमाई है। ये पक्का समझ लो.. याद से ही कमाई है। ऐसा कभी सुना कि याद से कमाई होती है! कितनी बड़ी कमाई है, तुम विष्णुपुरी के मालिक बन जायेंगे। तुम जानते हो हम आत्माओं का बाप निराकार है। उसने (Shiva) इस शरीर का (Brahma) आधार लिया है। भागीरथ का भी वर्णन है ना। भाग्यशाली रथ, जिस रथ पर परमपिता की परम आत्मा सवार होती है। आत्मा का रथ जब तैयार होता है तो झट आत्मा आकर प्रवेश करती है। बाप को तो इस रथ में आकर सिर्फ नॉलेज देनी है। इनके भी बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में जब वानप्रस्थ अवस्था

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

होती है तब बाप कहते हैं - मैं आकर इनमें प्रवेश करता हूँ अथवा इस रथ में विराजमान होता हूँ। बाकी कोई घोड़े गाड़ी के रथ की बात नहीं है। अभी तुमको यह ज्ञान मिला है। बाप बैठ सम्मुख तुम बच्चों को समझाते हैं। तुमको तो बहुत खुशी होनी चाहिए। आई.सी.एस. का इम्तहान पढ़ते हैं तो बड़ा नशा रहता है। वह होता है सबसे ऊंच इम्तहान। तुम्हारी भी यह पढ़ाई है। यह भगवान की पाठशाला है। अब प्रश्न उठता है भगवान कौन? क्या श्रीकृष्ण या शिवबाबा? सबका भगवान कौन है? सिवाए एक निराकार के सब तो श्रीकृष्ण को मानेंगे नहीं। सभी आत्माओं का बाप वह निराकार परमपिता परमात्मा है। वह सदैव परमधाम में रहते हैं। एक ही बार आते हैं - बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाने। तुम जानते हो वही बाबा कल्प-कल्प आकर हमको रंक से राव बनाते हैं। भारत अब रंक है ना। फिर दूसरे जन्म में क्या बनना है, तुमको सब साक्षात्कार हुए हैं। विनाश का भी साक्षात्कार किया है। स्थापना का भी किया है। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता

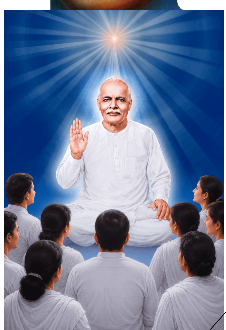

वाह रे मैं...

चढ़ाओ नशा...

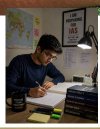

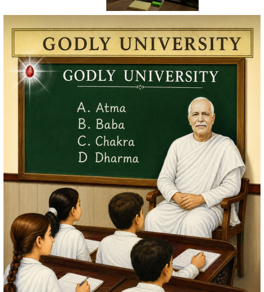

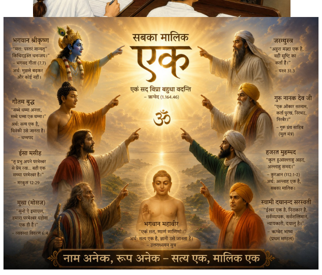

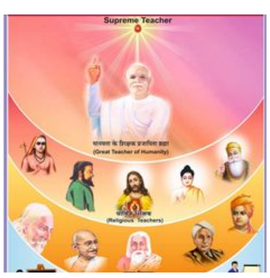

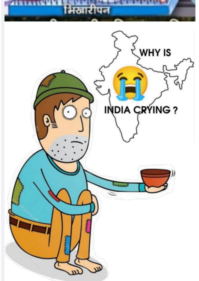

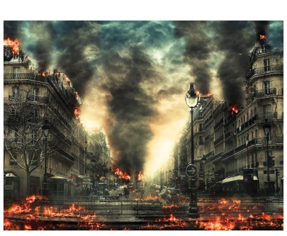

वाह मेरे भाग्य ...!
मुजे मिले भगवन..

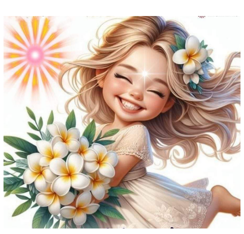

हूँ। बहुत दान-पुण्य करने से कोई को अल्पकाल का सुख मिलता है। राजाओं के पास जन्म ले फिर फट से मर जाते हैं। कोई गर्भ में भी मर जाते हैं। कोई लूले लंगड़े, काने बन जाते हैं। जैसे कर्म करते हैं वैसा पद पाते हैं। अब तुमको तो राजाओं का राजा बनाते हैं। तुम कहते हो - बाबा हम बलिहार जायेंगे। तो जरूर राजाई भी तुम पायेंगे। भारत को महादानी खण्ड कहा जाता है। यहाँ दान-पुण्य बहुत करते हैं। वह फिर शुरू होता भक्ति मार्ग में। अब बाप तुमको 21 जन्मों के लिए दान देते हैं।

Simple Math..

अब तुम बाबा पर बलिहार जाते हो। तन-मन-धन सब कुछ दे दिया। अब बाप कहते हैं ट्रस्टी होकर रहो। अपना घरबार सम्भालो। सब शिवबाबा का है। मैं आपका हूँ, आपको ही याद करता हूँ। दिल से सरेन्डर करते हैं। बाप कहते हैं भल महल में रहो, घूमो फिरो मौज मनाओ, सिर्फ मुझे याद करो तो तुम बहुत खुशी में रहेंगे। तुम विश्व के मालिक थे। अब फिर तुम पुरुषार्थ कर वह बनते हो। बाप समझाते हैं - मीठे-मीठे बच्चों इस योगबल से ही तुम विकर्माजीत बनेंगे। बाप की याद से तुम विश्व

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

के मालिक बनते हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) राजाई पद पाने के लिए बाप पर पूरा-पूरा बलिहार जाना है। तन-मन-धन सब समर्पण कर ट्रस्टी होकर रहना है। विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ करना है।

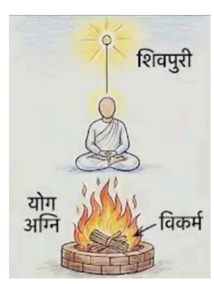

निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
निरन्तर का संधि विच्छेद निः + अन्तर होता है।

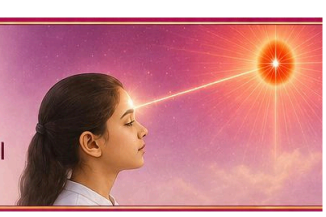

2) याद में ही कमाई है, इसलिए निरन्तर याद में रहने का पुरुषार्थ करना है। ऐसा रूहानी फूल बनना है जो फूलों की दुनिया का अधिकारी बन जायें। अन्दर में कोई भी कांटा न रहे।

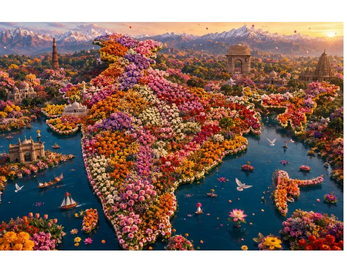

13-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-एक बाप में सारे संसार का अनुभव करने वाले बेहद के वैरागी भव

Refer last pages for Wonderful song by considering Baba As our World.

ये पक्का समझ लो..

बेहद के वैरागी वही बन सकते जो बाप को ही (only) अपना संसार समझते हैं।

तेरे दिल में रहेंगे, तुझको अपना घर बना लेंगे
तेरे ख़्वाबों को गहनों की तरह खुद पर सजा लेंगे
कसम तेरी कसम तकदीर का रूख मोड़ देंगे हम

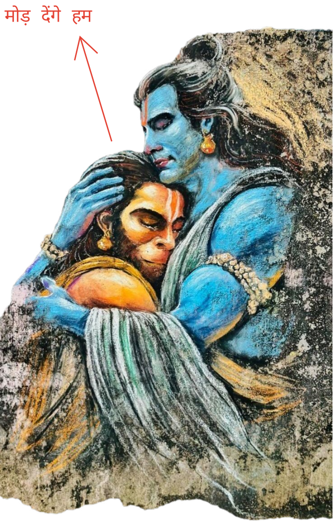

जिनका बाप ही संसार है वह अपने संसार में ही रहेंगे, दूसरे में जायेंगे ही नहीं तो किनारा स्वत: हो जायेगा। संसार में व्यक्ति और वैभव सब आ जाता है।

Point to be Noted

बाप की सम्पत्ति सो अपनी सम्पत्ति - इसी स्मृति में रहने से बेहद के वैरागी हो जायेंगे। कोई को देखते हुए भी नहीं देखेंगे। दिखाई ही नहीं देंगे।

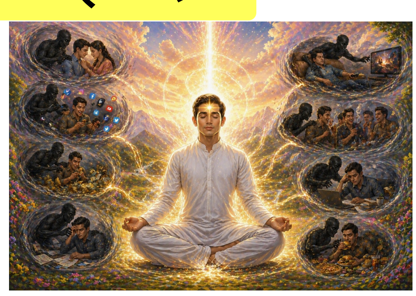

स्लोगन:-पावरफुल स्थिति का अनुभव करने के लिए एकान्त और रमणीकता का बैलेन्स रखो।

Points: धारणा सेवा M.imp.

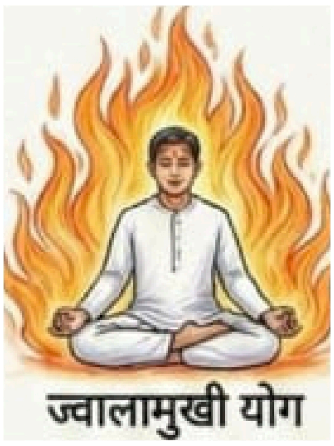

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

जैसे किला बांधा जाता है, जिससे प्रजा किले के अन्दर सेफ रहे। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते हैं।

आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला रूप याद का किला बांधो। याद के शक्ति की ज्वाला हो तो हर आत्मा सेफ्टी का अनुभव करेगी।

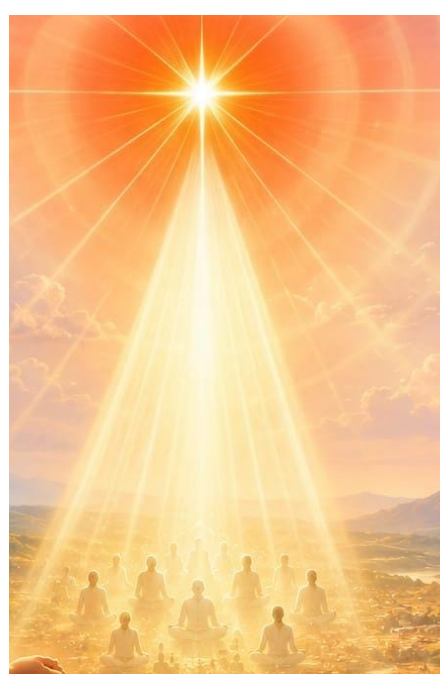

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.2 विशेष सेवाधारी बनने के लिए अमृतवेले के महत्व को समझो :

Point to be Noted

सेवाधारियों की विशेषता क्या है ? सेवाधारी अर्थात् आँख खुले और सदा बाप के साथ बाप के समान स्थिति का अनुभव करे। अमृतवेले के महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी की महिमा है — जो विशेष वरदान के समय को जाने और विशेष वरदानों का अनुभव करे। अगर अनुभव नहीं तो साधारण सेवाधारी हुए, विशेष नहीं। विशेष सेवाधारी बनना है तो यह विशेष अधिकार लेकर विशेष बन सकते हो। जिसको अमृतवेले का, संकल्प का, समय का और सेवा का महत्त्व है, ऐसे सर्व महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी होते हैं। तो इस महत्व को जान महान बनना है। इसी महत्व को जान स्वयं भी महान बनो और औरों को भी महत्व बतला कर, अनुभव करा कर महान बनाओ।

46

यह एक मास ऐसा नेचरल नेचर बनाओ क्योंकि नेचरल नेचर जल्दी में बदलती नहीं है। तो नेचरल नेचर बनाओ जो बताया ना - सदा आपके चेहरे से बाप के गुण दिखाई दें, चलन से बाप की श्रीमत दिखाई दे। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा हो। सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की चाल हो। हर कर्म में, कर्म और योग का बैलेन्स हो। कई बच्चे बापदादा को बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं, बतायें क्या कहते हैं? कहते हैं बाबा आप समझ लो ना मेरी यह नेचर है, और कुछ नहीं है, मेरी नेचर ही यह है। अभी बापदादा क्या कहे? मेरी नेचर है? मेरा बोल ऐसा है, कई ऐसे कहते हैं, क्रोध थोड़ेही किया, मेरा बोल थोड़ा बड़ा है, थोड़ा तेज बोला, क्रोध थोड़ेही किया सिर्फ तेज बोला। देखो कितनी मीठी-मीठी बातें हैं। बापदादा कहते हैं जिसको आप मेरी नेचर कहते हो मेरा कहना ही रांग है। मेरी नेचर यह रावण की नेचर है या आपकी नेचर है। आपकी नेचर अनादिकाल आदि काल, पूज्य काल यह ओरीज्नल नेचर है। रावण की चीज़ को मेरा-मेरा कहते हो ना इसीलिए जाती नहीं है। पराई चीज़ को अपना बनाकर रखा है ना, कोई पराई चीज़ को अपने पास सम्भालकर रखे, छिपाकर रखे, अच्छा माना जाता है? तो रावण की नेचर, पराई नेचर उसको मेरा क्यों कहते हो? बड़े फखुर से कहते हैं मेरा दोष नहीं है, मेरी नेचर है। बापदादा को भी रिझाने की कोशिश करते हैं। अभी यह समाप्ति समारोह करेंगे! करेंगे? करेंगे? देखो, दिल से कहो, मन से करो, जहाँ मन होगा ना, वहाँ सब कुछ हो जायेगा। मन से मानो कि यह मेरी नेचर नहीं है। यह दूसरे की चीज़ है, वह नहीं रखनी है। आप तो मरजीवा बन गये ना। आपकी

m.m.m....imp.

Subtle Psychology

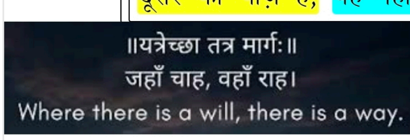

51

धर्मराज

ब्राह्मण नेचर है या पुरानी नेचर है? तो समझा बापदादा क्या चाहते हैं? भले मनोरंजन मनाओ, डांस करो, खेल करो लेकिन... लेकिन है। सब कुछ करते भी समान बनना ही है। समान बनने के बिना साथ चलेंगे कैसे! कस्टम में, धर्मराजपुरी में ठहरना पड़ेगा, साथ नहीं चलेंगे। एक मास अटेन्शन रखेंगे। एक मास अगर अटेन्शन रखा तो नेचरल हो जायेगा। मास का एक दिन भी छोड़ना नहीं। सभी इकट्ठे होके एक दो के प्रति शुभ भावना शुभ कामना का हाथ फैलाओ। जैसे कोई गिरता है ना तो उसको हाथ से प्यार से उठाते हैं तो शुभ भावना और शुभ कामना का हाथ, एक दो को सहयोग देके आगे बढ़ाते चलो। ठीक है? सिर्फ आप चेक कम करते हो, करके पीछे चेक करते हो, हो गया ना! पहले सोचो, पीछे करो। पहले करो पीछे सोचो नहीं। करना ही है।

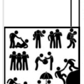

Here is the Fault

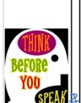

(05.03.2008)

link of this song:→ Click

बापदादा कहते है कि : यह स्वदर्शन चक्र ही भविष्य में चक्रवर्ती राजा बना देता है।

तो आज आत्मा सजनी की सच्चे शिव साजन से स्वदर्शन चक्र फिराते हुए दृढ़ संकल्पो से भरी रूह रुहान।

Movie : dil to bachha hai ji (2010)

######

Spinnin' round and round
You got away with me, you mighty boy
Spinnin' round and round
Let's go to have a little funny fun
Spinnin' round and round
Get to see all the on the get around
And round, and round, and round, yeah...X2

(सदैव/non stop फिरते हुए स्वदर्शन चक्र [जिससे की माया तुम्हारे और मेरे बिच में जरा भी interfere न कर सके] के साथ तुमसे वायदा करते हैं की...)

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi ye wada kar liya
Tere bin ho chalna bhi sazaa
Ke raahon se abhi ye wada kar liya
||2||

(ओ मेरे सारे ब्रह्माण्ड के सबसे सुन्दर/खूबसूरत/परम पवित्र पार वतन में रहनेवाले शिव साजन...!

तुम्हारे बिन मुझे अब आने वाली सुबह इन स्थूल आँखों से देखनी नहीं हैं अर्थात तूम्हारे बिन इस स्थूल शरीर में रहना नहीं हैं जो मैं ये पतित पुरानी दुनिया देखूँ- ये वादा हैं मेरा मेरी इन स्थूल आँखों से।

तेरे बिन एक कदम चलना भी किसी कड़ी से कड़ी सजा से कम न हो-ये हमने राहों से वायदा कर लिया हैं।)

Suno yahi jazbaat hai mere
Ye dil kahe ki khwahishe jeene ki sath hain tere

(ओ मेरे सच्चे हमसफ़र..!
जरा गौर से मेरे सच्चे और पवित्र जज्बात/feelings को सुनो जो कहते है कि ये जो थोड़ा सा संगम का समय बचा है उसके हर पल को बस तुम्हारे साथ ही बिताऊं/जीऊ - जो की मेरे दिल की सच्ची ख्वाहिशें हैं।)

Tere bin ho saanso se juda
Hawaao se abhi ye wada kar liya
(हमने हवाओं से भी अब ही वायदा कहो या order कर दिया हैं की

अगर तुम मेरे साथ नहीं तो उस हवा को अपने जिस्म में प्रवेश करने की इज़ाज़त नहीं हैं अर्थात हर पल आपकी ही याद में बीते।)

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi ye wada kar liya

#####
स्व दर्शन चक्र

Spinnin' round and round
You got away with me, you mighty boy
Spinnin' round and round
Let's go to have a little funny fun
Spinnin' round and round
Get to see all the on the get around
And round, and round, and round, yeah...

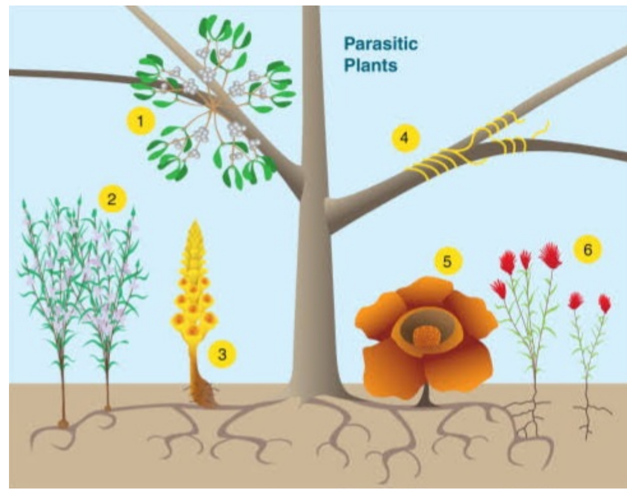

Tu woh zameen jis pe maine to apni ye duniya basaai hai
Main bin tere ab kahaan jaaunga

Total surrender

(ओ मेरी रूह..! {जैसे जिस्म रूह के बिना जिंदा नही रह सकता, तो मैं जिस्म आप मेरी रूह}
तुम ही तो मेरी वो सारी जमीन हो जिस पर मैंने अपनी पूरी दुनिया बसाई हैं-
जैसे कि मैं परोपजीवी पौधा/parasite और आप जीवंत मुख्य वृक्ष...

तो अब तुम्ही बताओं की ओ मेरी दुनिया, मेरे संसार - मैं तुम्हारे बिना अब जाऊं तो जाऊं कहाँ...?)

Tu aasra hai mera main to jeeta hoon tere bharose pe
Main bin tere ab naa jee paaunga

(जैसे किसी भटकते हुए बंजारे को आशरा मिल जाता हैं, जैसे किसी अति प्यासे को पानी मिल जाता है
उसी प्रकार अब तुम ही तो मेरा आशरा हो-जिसके भरोसे पर ही तो मैं जिन्दा हूँ।

तो ओ मेरे सच्चे सहारे...
मैं अब तो एक पल भी तुम्हारे बिना न जी पाउँगा।)

Meri to ye har baat tujh se hai

(मेरी तो हर एक बात अर्थात हर एक पल अब तुजसे ही हैं। सारि दुनिया मेरे लिए जैसे कि खत्म हुई पड़ी है।

Tu hi meri hai dhoop aur meri barsaat tujh se hai

मुज सूर्यमुखी की तुम ही तो वो धुप हो जिसे ग्रहण करने के लिए हर दम तुमको ही देखती रहती हूं और
तुम्हारे प्यार की मुज प्यासी चात्रक आत्मा की प्यास भी तुज बरसात से ही हैं।)

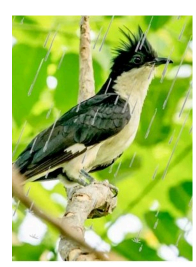

Tere bin na barse ye ghata
Ghataaon se abhi ye wada kar liya

(चूँ की मैं तुज सर्वशक्तिमान साजन की सजनी हूँ - तो मैं भी मास्टर सर्वशक्तिमान प्रकृतिजीत मायाजीत हूँ।
तो मैंने घटाओं से वायदा कहो या फिर strict order...
कह दिया हैं की अगर तुम मेरे साजन जो मेरे साथ नहीं तो उन घटाओं को बरसने की इज़ाज़त नहीं हैं।)

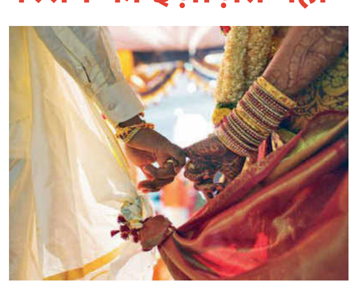

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi yeh wada kar liya

######

Round and round... (स्वदर्शन चक्र)

Jo haath mein ho tera haath toh ye lakeere dhadakti hai
tu ho juda, sab thama sa lage

(ओ मेरे प्रियतम...!
जो मेरे हाथ में तुम्हारा हाथ हो तो इस हाथो की निर्जीव सी लकीरे भी धड़कने लगती हैं।

और अगर तुम मुज से जुदा होते हो तो चाहे इस दुनिया में अपार धन, सुख सुविधाओ समेत मित्र संबंधियो का मेला ही क्यों न लगा पड़ा हो -

परंतु जो तुम नही तो सारी दुनिया ही मेरे लिए थम जाती हैं अर्थात उसमे रिंचक भी रस व सुख नहीं भासता।)

Jo tu mere paas hai to yakeen apne hone pe hota hai
Tu ho juda sab guma sa lage

(तुम अगर मेरे साथ होते हो तो ' मैं हूँ '- इस बात का मुझे यकीन होता हैं अर्थात तुम हो तो मैं हूँ, जो तुम नहीं तो मैं कुछ भी नहीं।

तुम मुझसे एक पल भी अगर जुदा हो तो
सबकुछ जैसे की बेयकिन/गुमनाम सा लगता हैं।)

Haa tu meri aadat me shaamil hai
mere liye main sach kahoon tu ibaadat ke qabil hai

(हाँ ये भी सच हैं की अब तो तुम मेरी आदत अर्थात संस्कारो में बस गए हों और इतने तो deep मेरे संस्कार में बस गए हो- जो माया सहित विश्व की सर्व आत्माएं एक जुट हो के भी इस संस्कारों को मिटाना चाहे 【अर्थात हम दोनों को जुदा करना चाहे】 तो भी रिंचक मात्र मिटा न सके। [जुदा न कर सके।]

ओ मेरे सनम,
तुम को मैं एक सच्ची बात कहूँ ..
तुम मेरे इबादत के काबिल तो क्या परंतु तुम ही मेरी हर एक पल की इबादत हो।

जिसमे बस तुम्हे पाने की अर्थात तुम समान बनने की ही ख्वाहिस हैं।)

Tere bin naa poori ho duaa
Duaaon se abhi ye wada kar liya

(तुम्हारे बिन अब मेरी कोई भी दुआएं पूरी न हो अर्थात हर संकल्पमे तुम्हारी ही श्रीमत एवं याद व प्यार हो, दुनियावी प्राप्ति की रिंचक मात्र भी इच्छा नही।

तो ये हमने दुआओं से भी अब ही पक्का वायदा कर लिया हैं।)

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi ye wada kar liya

Round and Round... (स्व दर्शन)

∞======================∞

तो ये स्वदर्शन चक्र घूमने के कारण ये Result निकलता है कि हमारे सच्चे मात, पिता, बंधु, सखा, in short सर्वस्व सिर्फ शिव बाबा ही है।

जिसे भक्ति में सिर्फ कहने मात्र कहते थे कि

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव । ।

ड्रामा में सतयुग से लेकर अब तक भिन्न भिन्न आत्माओ के साथ जो पार्ट बजाया वो मात्र खेल था। उदाहरण: जैसे एक एक्टर किसी नाटक या फ़िल्म में किसी के साथ कैसा भी पार्ट बजाए किन्तु उसका सच्चा रिस्ता तो उसके परिवार से है जो उसके घर पर इन्तेजार कर रहा है।

तो अब हमें भी घर जाना है इसलिए दुनियावी सभी पार्टधारी को भूल अब अपने सच्चे घर परमधाम व सच्चे सर्व-संबंधी शिवबाबा को ही याद करना है।

list of other movie songs
Along with
Ruh-Rihaan

Click